अध्याय 28

परमेश्वर का दर्शन तथा एक प्रतिज्ञा

रिबका ने 27:46 में इसहाक से अपनी चिंता जताई कि याकूब हित्ती लड़कियों में से एक से विवाह कर सकता है (देखें 23:10) जो कनान में रहते थे। एसाव ने उनमें से दो महिलाओं से विवाह किया था और उसके कारण उसके माता पिता को दुःख पहुँचा (26:34, 35)। रिबका ने शिकायत की कि यदि उसके छोटे पुत्र ने भी इन अन्य जातीय स्त्रियों में से किसी से विवाह किया तो उसका जीवन जीने लायक नहीं बचेगा।

यद्यपि रिबका अपने ज्येष्ठ पुत्र के विवाह से दुःखी थी, लेकिन वह चाहती थी कि इसहाक, याकूब को अविलंब दूर भेजे क्योंकि एसाव से वह भयभीत थी कि कहीं वह पिता के मृत्यु के बाद अपने भाई की हत्या न कर दे (27:41, 42)। एसाव अपने आशीर्वाद को चुराए जाने का बदला लेना चाहता था जिसे याकूब अपनी माता की सहायता से धोखे से चुराया था।

हारान की ओर जाने से पूर्व याकूब को इसहाक का आदेश (28:1-5)

[1]तब इसहाक ने याकूब को बुलाकर आशीर्वाद दिया और आज्ञा दी, कि तू किसी कनानी लड़की को न ब्याह लेना। [2]पद्दनराम में अपने नाना बतूएल के घर जा कर वहां अपने मामा लाबान की एक बेटी को ब्याह लेना। [3]और सर्वशक्तिमान ईश्वर तुझे आशीष दे और फुला-फला कर बढ़ाए और तू राज्य राज्य की मण्डली का मूल हो। [4]और वह तुझे और तेरे वंश को भी इब्राहीम की सी आशीष दे, कि तू यह देश जिस में तू परदेशी हो कर रहता है और जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था, उसका अधिकारी हो जाए। [5]और इसहाक ने याकूब को विदा किया और वह पद्दनराम को अरामी बतूएल के उस पुत्र लाबान के पास चला, जो याकूब और एसाव की माता रिबका का भाई था।

आयतें 1, 2. इसहाक ने याकूब को अपने पास बुलाया और रिबका की इच्छा को पूरा करते हुए उसे **आशीर्वाद दिया और** यह **आज्ञा दी** वह **कनानी** स्त्री से विवाह **न** करे। बल्कि, उसने अपने छोटे पुत्र को **पद्दनराम**[1] के हारान जाने के लिए कहा (27:43; 28:10) कि वह रिबका के पिता **बतूएल के** घराने से अपने लिए एक पत्नी ले। विशेष कर वह जवान स्त्री, **उसके मामा लाबान की** पुत्रियों में से होना चाहिए। इसहाक ने याकूब को जो सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों

प्रकार का आदेश दिया था, वह वर्षों पूर्व अब्राहम का आदेश जो उसने अपने दास को अपने पुत्र के लिए पत्नी ढूँढने के लिए दिया था, का स्मरण दिलाता है (24:2-4)। इसहाक और रिबका ने पहचाना कि यदि याकूब ने विदेशी स्त्री से विवाह किया तो एक सच्चे परमेश्वर पर विश्वास, या तो सताव या समायोजन के द्वारा खतरा पैदा हो सकता है।

आयत 3. इसहाक ने याकूब को भेजने से पूर्व उसे **सर्वशक्तिमान परमेश्वर** אֵל שַׁדַּי *(एल शद्दाई)*[2] के नाम से आशीर्वाद दिया। इसके साथ ही उसने यह विनती की कि परमेश्वर उसको **फुला-फला** कर आशीष दे ("बढ़ाए"; NIV), जो सृष्टि की मूल आशीषों की ओर इशारा करती है (1:22, 28; देखें 8:17; 9:1, 7)। इसहाक ने यह अंदेशा जताया कि याकूब का परिवार **राज्य राज्य की मण्डली का मूल होगा**।

आयत 4. कुलपति ने याकूब के लिए **अब्राहम की सी आशीष** की भी विनती की (देखें 17:6-8), जिसे उसने स्वंय प्राप्त किया था (26:3, 4, 24)। इसहाक की यह विनती इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उसने पहली बार अपने छोटे पुत्र को अपना आधिकारिक उत्तराधिकारी माना। इस भूमिका में याकूब को यात्रा करते हुए उस भूमि पर कब्ज़ा भी जमाना था जिसे **परमेश्वर ने अब्राहम को दिया था** जब उसने (परमेश्वर) उसे मेसोपुतामिया से बुलाया था और प्रतिज्ञा के देश में लाया था (12:2, 3; 13:15-17; 15:7, 18; 17:6-8, 16, 20; 22:17; 24:7)। यह आशीष यह भी दिखाती है कि इस वृद्ध व्यक्ति ने अब यह मान लिया था कि परमेश्वर ने एसाव को उसकी आशीषों का मुख्य प्राप्तकर्ता न बनाने की इच्छा को बदल दिया था। बल्कि, इन आशीषों का वास्तविक प्राप्तकर्ता याकूब है जो मूल में अब्राहम को दी गई आशीषों और प्रतिज्ञाओं की एक कड़ी होगा जो पहले इसहाक को दी गई थी और अब उन आशीषों की कड़ी उसके छोटे पुत्र को दे दी गई है।

आयत 5. रिबका ने जब पहले याकूब को एसाव के क्रोध एंव उसको मार डालने की योजना बताई, तो वह घर पर ही ठहरा रहा। फिर भी, उसके बार बार आग्रह के कारण (27:46), **इसहाक ने याकूब को दूर भेज दिया**। जब कि इस यात्रा ने याकूब के लिए उसके मौत से छुटकारा का कार्य किया, लेकिन इसका उल्लेखित उद्देश्य यह था कि वह **पद्दन** आराम में जाकर अपने लिए एक पत्नी ढूँढे। याकूब की पत्नी **बतूएल** और **लाबान** के परिवार, रिबका के पिता और **भाई**, में से होनी चाहिए (24:24, 29)। इसहाक के निर्देशानुसार, याकूब लगभग चार सौ मील की लंबी यात्रा में निकल पड़ा (देखें 28:10)।

इसहाक को प्रसन्न करने के लिए एसाव का विलंबित विवाह (28:6-9)

[6]जब इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देकर पद्दनराम भेज दिया, कि वह वहीं से पत्नी ब्याह लाए और उसको आशीर्वाद देने के समय यह आज्ञा भी दी, कि तू किसी कनानी लड़की को ब्याह न लेना; [7]और याकूब माता पिता की मान कर पद्दनराम को चल दिया; [8]तब एसाव यह सब देख के और यह भी सोच कर, कि

कनानी लड़कियां मेरे पिता इसहाक को बुरी लगती हैं, 9इब्राहीम के पुत्र इश्माएल के पास गया और इश्माएल की बेटी महलत को, जो नबायोत की बहिन थी, ब्याह कर अपनी पत्नियों में मिला लिया।

आयतें 6-8. एसाव ने देखा कि **इसहाक ने याकूब को** उसकी माँ के निवेदन पर **आशीष दी है** और **उसने उसे** अपने लिए एक पत्नी ढूँढने के लिए **पद्दन आराम भेज दिया है**। तो वह स्पष्टतया आश्चर्यचकित रह गया कि उसके पिता ने उसे **कनानी लड़की से उसे विवाह करने से मना किया है**। परमेश्वर का विश्वासी न होने के कारण (इब्रा. 12:16) एसाव आत्मिक सच्चाई से अनभिज्ञ था लेकिन वह एक भोला व्यक्ति भी था जिसने उचित कुल में विवाह करने की परंपरा को गंभीरतापूर्वक नहीं समझा। अतः उसे यह कभी भी ज्ञात नहीं हुआ कि उसके माता पिता उसके हित्ती पत्नियों से प्रसन्न नहीं थे (देखें 26:34, 35)। यह अविश्वसनीय है कि यह उसने कभी नहीं जाना कि अब्राहम और इसहाक के संतानों के मध्य कनानी पत्नियां ठीक नहीं बैठतीं हैं।

आयत 9. पाठ यह बताता है कि एसाव ने अपने आपको इस बंधन से छुड़ाने और अपने माता पिता को प्रसन्न करने के लिए, अब्राहम और हागर से उत्पन्न इश्माएलियों के वंश में से किसी लड़की के साथ विवाह करने की सोचीः उसने **इश्माएल की पुत्री महलत जो नबायोत की बहन थी**, से विवाह किया। उसका यह निर्णय प्रभावरहित था क्योंकि एसाव ने अपने वंशजों में विश्वास की किसी भी प्रकार की आत्मिक विरासत नहीं छोड़ी। इश्माएल के भाँति कुछ सीमा तक वह अब्राहम के भौतिक आशीष का भागी होगा - लेकिन परमेश्वर के उस बड़े वरदान कि वह एक बड़ा राष्ट्र बनेगा और पृथ्वी के सारे कुल उसके द्वारा आशीष पाएंगे, का भाग नहीं बन पाएगा (12:2, 3; गला. 3:8, 9, 14-16, 29)।

बेतेल में याकूबः परमेश्वर का दर्शन और मन्नत (28:10-22)

याकूब का स्वप्न (28:10-17)

10सो याकूब बेर्शेबा से निकल कर हारान की ओर चला। 11और उसने किसी स्थान में पहुँच कर रात वहीं बिताने का विचार किया, क्योंकि सूर्य अस्त हो गया था; सो उसने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले अपना तकिया बना कर रखा और उसी स्थान में सो गया। 12तब उसने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुंचा है और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं। 13और यहोवा उसके ऊपर खड़ा हो कर कहता है, कि मैं यहोवा, तेरे दादा इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का भी परमेश्वर हूं: जिस भूमि पर तू पड़ा है, उसे मैं तुझ को और तेरे वंश को दूंगा। 14और तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और पच्छिम, पूरब, उत्तर, दक्खिन, चारों ओर फैलता जाएगा और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल

आशीष पाएंगे। 15और सुन, मैं तेरे संग रहूँगा और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ तेरी रक्षा करूँगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊँगा: मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूँ तब तक तुझ को न छोड़ूँगा। 16तब याकूब जाग उठा और कहने लगा; निश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न जानता था। 17और भय खा कर उसने कहा, यह स्थान क्या ही भयानक है! यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन यह स्वर्ग का फाटक ही होगा।

आयत 10. याकूब बेर्शेबा से, जोकि कई वर्षों से परिवार के रहने का स्थान बना हुआ था, चला गया, क्योंकि एक तो एसाव ने उसे जान से मारने की धमकी थी और इसलिए भी कि उसका अपने लिए एक उपयुक्त पत्नी ढूँढने का समय आ गया था (26:23, 33; देखें 22:19)। वह मेसोपोटामिया के उत्तरपश्चिम में स्थित **हारान** में पद्दनराम **की ओर गया** (28:2, 5)।[3] हारान याकूब की माता का मूल जन्मस्थान था। परन्तु, इसका एक अन्य बड़ा महत्व भी था। यह वही स्थान है, जहाँ अब्राहम, अपने पिता के मृत्यु के बाद रहा करता था, और जहाँ पर परमेश्वर ने उसे अपना घर और अपना परिवार छोड़ने के लिए और प्रतिज्ञा के देश में जाने के लिए बुलाया था (12:4, 5)।

इसहाक द्वारा अपने पुत्र याकूब को हारान भेजना इससे पहले अब्राहम द्वारा अपने सेवक को भेजते समय दिए गये निर्देश के विपरीत है, जिसे इसहाक के लिए पत्नी ढूँढने के लिए भेजा गया था: "चौकस रह, मेरे पुत्र को वहां कभी न ले जाना!" (24:6)। याकूब के विषय में यह कार्य अलग तरीके से किये जाने का कारण यह था, कि याकूब को एसाव की ओर से अपनी जान का खतरा था। उसे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए जाना ही था।

एक अन्य चौंकाने वाला अंतर सम्पत्ति का था जो यात्राओं के दौरान भेजी जाती थी। अब्राहम, जब उसने इसहाक के लिए पत्नी लाने का निश्चय किया, उसने दस ऊँट सोने, चाँदी और कीमती वस्तुओं से लदे हुए रिबका और उसके परिवार के लिए भेजे थे (24:10, 22, 52, 53)। परन्तु याकूब को खाली हाथ ही भेजा गया था। उसके पास कोई सोना, चाँदी या यहाँ तक कि चीज़ों से लदा हुआ एक ऊँट भी नहीं था जो उसे लाबान को उसकी पुत्री के लिए देना था। इसहाक ने ऐसा क्यों किया, जिसे अब्राहम से बहुत सम्पत्ति विरासत में मिली थी, कि उसने याकूब को एक दरिद्र के समान भेज दिया? यह कार्य इसहाक के बड़े दुःख को प्रकट करता है जो याकूब के हाथों मिले धोखे से उसे मिला था।

इसके अतिरिक्त, इसहाक ने याकूब को इस तरह हारान की ओर लम्बी और खतरनाक यात्रा पर बिना ऐसे सेवकों के अकेले ही भेज दिया, जो उसकी सेवा करते या लुटेरों से उसका बचाव करते। अपने घर के छोड़ने और अपने प्राण को बचाकर भागने के दुःख के साथ ही साथ, वह अपने भविष्य को लेकर भयभीत होगा जो उसके सामने था। इन परिस्थितियों ने भी याकूब को अपने पुरखों के परमेश्वर पर गहरा विश्वास करने की ओर अगुवाई की।

आयत 11. जैसा याकूब ने पद्दनराम की ओर यात्रा की, उसे विचित्र और

जीवन परिवर्तन करने वाला अनुभव हुआ। जबकि **सूर्य डूब चुका था**, याकूब **एक स्थान पर पहुँचा और वहाँ रात बिताई**। 28:19 में इस स्थान को "बेतेल" नाम से जाना गया है। यह बेर्शेबा से बेतेल तक लगभग 55 मील की दूरी पर था, यह सम्भवतः याकूब की यात्रा का तीसरा दिन था। इस अन्धकार में आगे यात्रा करने का प्रयास समझदारी नहीं थी, अनजाने क्षेत्र, हिंसक जानवरों या राह मे घात में बैठे लुटेरों के कारण ऐसा खतरनाक हो सकता था। इसलिए **उसने एक पत्थर लिया** और उसे **अपने सिर के नीचे रखकर** अपना तकिया[4] बना लिया और **उसी स्थान पर सो गया**।

आयत 12. उस रात याकूब को एक अनोखा **स्वप्न** आया। भय के भयावह अनुभव और अनसुलझा अपराध जो उसकी बीते समय की लज्जा को उसे याद करवा रहा था उसके बजाए उसने **एक सीढ़ी** के विषय स्वप्न देखा ... **जो पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिरा स्वर्ग तक पहुंचा है**। इब्रानी भाषा में सीढ़ी סֻלָּם *(सुलाम)* के लिए शब्द पुराने नियम मात्र इसी स्थान पर प्रयोग किया गया है। यहाँ तक कि "सीढ़ी" पारम्परिक अंग्रेजी बाइबल से लिया गया है (KJV; NRSV; NASB; NEB), अन्य अनुवाद (NIV; NJPSV; NLT) में सीढ़ी का प्रयोग किया है। अधिकांश भाषाविदों का कहना है कि *"सुलाम"* को סָלַל *(सलाल)* से लिया गया है, जिसका अर्थ है "उपर उठी हुई" या पत्थरों या आग से पकाई हुई ईंटों से "बनाई हुई।"[5] इस तरह के भवन निर्माण सामग्री के ढेर के द्वारा, प्राचीन मेसोपोटामिया में लोगों ने ऐसी मज़बूत सीढ़ियाँ बनाई थीं जो उनके महान जिग्गुरात (सीढ़ीनुमा पिरामिड)[6] मन्दिर की शिखर तक जाती थी। सीढ़ी का वर्णन कि "उसका सिरा स्वर्ग तक पहुँचा है" की महत्वता यह भी है क्योंकि यह 11:4 में बाबुल के गुम्मट की याद ताज़ा करती है, जहाँ पर इसी भाषा का प्रयोग किया गया है। याकूब के स्वप्न में सीढ़ी पर कोई भी मानव चढ़ उतर नहीं रहे थे; इसके विपरीत, **परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं**।

आयत 13. परमेश्वर सीढ़ी **के ऊपर खड़ा है**। इब्रानी अभिव्यक्ति נִצָּב עָלָיו *(नित्सब आलाव)* का अर्थ है "अधिकार के साथ खड़ा होना, किसी की अध्यक्षता करने के लिए।"[7] इस दर्शन ने परमेश्वर को स्वर्ग और पृथ्वी के अधिपति (शासक) के रूप में चित्रित किया है, वह जिसका जीवित प्राणियों, पृथ्वी के या स्वर्ग के, सब पर उसका अधिकार है। वह न ही मनुष्यों की युक्तियों के अधीन है और न ही उन पर निर्भर है। सर्वोच्च के होते हुए वह सभी देवताओं या दिव्य प्राणियों से ऊपर है जिनकी मनुष्य संकल्पना कर सकता है। याकूब ने यहोवा को किसी मूर्तिअराधक देवता के रूप में नहीं देखा, जिसके आराधक अपनी ही व्यक्तिगत बातों को पूरा करने के लिए हेरफेर का प्रयास करते हैं। इसके बजाए परमेश्वर की अपनी योजनाएँ और उद्देश्य हैं, वह उन्हें पूरा करने के योग्य है।

इन प्रकाशनों के अतिरिक्त, याकूब को यहोवा के साथ अपने सम्बन्ध के विषय मूल पाठ सीखने की ज़रूरत थीः कि उसने परमेश्वर के अनुग्रह को पाने के लिए कुछ भी नहीं किया था। अपने जीवन में अब तक, उसने झूठ, चालबाज़ी और धोखे से

बढ़कर कुछ नहीं किया था। उसकी करतूतों और व्यवहार ने भाई के साथ उसके सम्बन्ध को नाश कर दिया और अपने पिता के हृदय को तोड़ दिया। मात्र परमेश्वर के वास्तविक अनुग्रह ने इस भगौड़े पर स्वयं को **यहोवा** के रूप में प्रकट करने की पहल की, **तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर और तेरे पिता इसहाक का परमेश्वर**।

बड़ी हैरानी की बात है कि, परमेश्वर ने याकूब को उसके स्वार्थी कार्यों और कठोर व्यवहार जो उसने अपने भाई और पिता के साथ किया था उसे झिड़के बिना उससे बातचीत की। ताड़ना करने की बजाए, परमेश्वर ने एक सूक्ष्म दृष्टिकोण को चुना, स्वयं को अब्राहम और इसहाक के परमेश्वर के रूप में परिचय करवाया। इन शब्दों में हो सकता है एक दबी हुई ताड़ना हो। क्योंकि यहोवा पहली पीढ़ी (अब्राहम) का परमेश्वर था और दूसरी पीढ़ी (इसहाक) का परमेश्वर था, एक अस्पष्ट प्रश्न खड़ा हो गया था कि क्या परमेश्वर तीसरी पीढ़ी (याकूब) का परमेश्वर होगा? परमेश्वर ने उसे अपनी सेवा न करने के लिए सीधी तरह से नहीं डांटा था; उसने उस सम्भावना को खुला और वैकल्पिक छोड़ दिया इसके बजाए उसे वही सुसमाचार सुनाता जो परमेश्वर ने अब्राहम और इसहाक को सुनाया था। परमेश्वर ने याकूब पर उस प्रतिज्ञा को दोहराया जो उसने पहले उसके दादा के साथ की थी, यह कहते हुए कि वह **भूमि** जिस पर याकूब लेटा हुआ है वह उसको और **उसके वंश** को देगा।

आयत 14. परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को जारी रखा कि याकूब का **वंश भूमि की धूल के किनको** के समान होगा। **वे पश्चिम, पूर्व, उत्तर और दक्षिण में** चारों ओर **फैलता** जाएगा। यहाँ जो भाषा का प्रयोग किया गया है अक्षरशः वैसे ही प्रतिज्ञा को दोहराया गया है जैसे परमेश्वर ने अब्राहम के साथ की थी (13:14-16), और जो उसके बाद उसने इसहाक को संक्षिप्त रूप में दी थी (26:3, 4)। परमेश्वर इस बात को स्पष्ट कर रहा था कि याकूब और उसके **वंश** के द्वारा, वह **पृथ्वी के सारे कुलों** का आशीष देगा। याकूब को यह एहसास करना था कि वह सर्वविशिष्ट नहीं था, जो भी आशीष उसके स्वार्थी प्रयास के समर्थन के लिए थी वह एसाव और उसके वंश पर श्रेष्ठता बनाए रखने के लिए थी। उसे यह अवश्य याद रखना था कि परमेश्वर ने उसके दादा और उसके पिता को आशीषित किया था ताकि वे पृथ्वी के सारे कुलों के लिए "आशीष हों।"[8] पृथ्वी के सभी कुलों को आशीष पाने की प्रक्रिया में याकूब के लिए दिव्य मंशा थी ताकि वे सच्चे परमेश्वर को जान जाएँ जिससे सभी आशीषें प्रवाहित होती हैं।

अपने भाई और पिता के प्रति याकूब के निष्ठुर और कुटिल व्यवहार के बावजूद भी परमेश्वर ने इन सभी आशीषों को याकूब पर उण्डेलने की प्रतिज्ञा की। यह याकूब के लिए एक सार्थक परिवर्तन था। अभी तक, कहानीकार का बल याकूब के आशीष पाने के प्रयास पर था यहाँ तक कि कपट करने के द्वारा। यहाँ, परमेश्वर उन आशीषों के बल को बदल रहा जो याकूब "आशीष" पाने जा रहा था, उन्हें संसार के लिए अवश्य बनाना था (12:2)।

आयत 15. परमेश्वर ने याकूब को अतिरिक्त आशीषें देने के द्वारा उत्साहित किया, उसे अकेलेपन में, भय में और मेसोपोटामिया में उसके लिए आगे क्या

रखा है इस भय की अनिश्चतता में उसे प्रतिज्ञाएँ दी। परमेश्वर ने कहा, **मैं तेरे संग।** यह वही प्रतिज्ञा है जो परमेश्वर ने उसके पिता इसहाक को दी थी, जब वह संदेहजनक और शत्रु पलिश्तियों के बीच रहने चला गया था (26:3, 24; देखें 31:3; 46:4; 48:21)। परमेश्वर ने भाई के क्रोध से भागे हुए को आश्वासन दिया कि वह जहाँ भी जाएगा परमेश्वर उसकी चौकसी करेगा और उसकी रक्षा करेगा (देखें भजन 91:11-16)। परमेश्वर ने उससे यह भी कहा कि वह उसे कनान देश में फिर लाएगा जहाँ से वह भागकर जा रहा है। उसकी यात्रा हारान में अन्त नहीं होगी; उसके भविष्य में उसकी घर वापसी होगी। उसके माता पिता ने उसे प्रतिज्ञा के देश से बाहर भेज दिया परन्तु यहोवा उसकी घर वापिस आने के लिए अगुवाई करेगा।

कैसी भी रुकावटें इस अकेलेपन की यात्रा में याकूब की सामने खड़ी हों, परमेश्वर की एक ही प्रतिज्ञा थी कि वह उसे नहीं छोड़ेगा जब तक जो उसने प्रतिज्ञा की है उसे पूरा न कर ले। भले ही "जब तक" वाला यह वाक्यांश यह सुझाएगा कि भविष्य में ऐसा समय आएगा जब परमेश्वर याकूब को छोड़ देगा, इस संदर्भ में ऐसा दिखाई देता है प्रतीकात्मक युक्ति होगी। परमेश्वर की निश्चित उपस्थिति को याकूब को दृढ़ करने के लिए प्रतिकूल तरीके से इसका प्रयोग किया चाहे वह जीवन में कितनी भी कठिनाइयों का सामना करे। इसका अर्थ यह हुआ यहोवा कनान और मेसोपोटामिया के देवताओं से भिन्न था जिसको उनके अपने क्षेत्र से बाहर दुर्बल समझा गया। एकमात्र सच्चे परमेश्वर ने याकूब के साथ वाचा बांधी कि उसके कार्य की सफलता में कोई बाधा या रुकावट राह में नहीं आ सकेगी।

आयत 16. जब याकूब अपनी नींद से **जागा**, उसने उस स्वप्न की महत्वता को महसूस किया। यह कुछ ऐसा नहीं था जो उसके अपराध या भय के कारण उसके मन में प्रकट कर दिया गया था। इसके विपरीत, एक स्वप्न से बढ़कर था जिसने उसे उसके फरेब और झूठ का दोषी पाया, यह परमेश्वर के अनुग्रह, उसकी उपस्थिति, सुरक्षा और उसकी यात्रा में उसकी सफलता के लिए सुसमाचार था। याकूब ने यह कहने के द्वारा अपनी प्रतिक्रिया दी, **निश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न जानता था।** परमेश्वर का यह अनोखा दर्शन पूर्ण रूप से अप्रत्याशित था। क्या याकूब ने इससे पहले इस विचार पर कभी नहीं किया था कि परमेश्वर वास्तव में उसके जीवन में विद्यमान था? उसने निश्चय ही इस तरह की घटना का किसी पवित्रस्थान या मंदिर को छोड़कर अपवित्र स्थान पर होने की आशा नहीं थी।[9]

आयत 17. यदि याकूब निर्भय होकर सोने चला गया था, अब **वह भयभीत था** जो अब जाग उठा था। परमेश्वर की उपस्थिति ने उसे भयभीत कर दिया था। उसने कहा, **यह स्थान क्या ही भयानक है!** उसे एहसास हुआ कि वह पवित्र स्थान में सोया हुआ था क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति विशेष रूप से वहाँ थी। यह पहले महत्वहीन स्थान कुलपति के लिए अब अति महत्वपूर्ण बन गया था, जैसे उसने दो स्पष्ट वाक्यों में दर्शाया।

पहली बात, याकूब ने उस स्थान को **परमेश्वर का भवन** कहा। यह

पवित्रस्थान के लिए एक सामान्य शब्द था, जहाँ प्राचीन लोग विश्वास करते थे कि वहाँ देवताओं का वास है। परन्तु, यह महसूस किया कि परमेश्वर का भवन भौतिक मन्दिर तक सीमित नहीं रहा सकता, वह भी वहाँ जहाँ मनुष्य पूजा करते हैं। इसके बजाए, यह परमेश्वर के लोगों के साथ उसकी आत्मिक उपस्थिति थी, वह जहाँ भी होते थे।

दूसरी बात, याकूब ने इसे **स्वर्ग का फाटक** कहा, क्योंकि यह स्वयं परमेश्वर की ओर ले जाता है। यहाँ जो भाषा है वह बाबुल के गुम्मट की कहानी जैसी ही है (11:4, 9); "बाबुल" नाम का अर्थ है "परमेश्वर का फाटक" या "देवताओं का फाटक।" जबकि याकूब के स्वप्न में स्वर्ग तक एक सीढ़ी थी, बेतेल में कोई वास्तविक जग्गुरात विद्यमान नहीं था।

जबकि याकूब की अभिव्यक्तियाँ "परमेश्वर का भवन" और "स्वर्ग का फाटक" हैं यह दोनों ही मूर्तिपूजा से भ्रष्ट थीं, उन्होंने नया आत्मिक महत्व लेना आरम्भ किया। उसने उनको मानव निर्मित धार्मिक स्थल और मन्दिर का उल्लेख करने के लिए नहीं समझा था जहाँ मनुष्य बलिदानों और उपहारों के साथ देवताओं को प्रसन्न करने के द्वारा उनसे बातचीत करने लिए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, अब वह यह जानता था कि एक व्यक्ति को परमेश्वर के सामने स्वयं को योग्य प्रमाणित नहीं करना था जिससे परमेश्वर उसे आशीष दे और उसे कहे कि वह उसकी संगति में प्रवेश करे। इसके विपरीत, एक अनोखे स्वप्न के रूप में, परमेश्वर ने याकूब, एक पापी मनुष्य, पर स्वयं को प्रकट करने का पहला कदम उठाया। परमेश्वर ने उसे बुलाया और उसे आशीष दी, जैसे उसने अब्राहम और इसहाक, उसके दादा और पिता को दी थी।

याकूब की मन्नत (28:18-22)

18भोर को याकूब तड़के उठा, और अपने तकिए का पत्थर ले कर उसका खम्भा खड़ा किया, और उसके सिरे पर तेल डाल दिया। 19और उसने उस स्थान का नाम बेतेल रखा; पर उस नगर का नाम पहिले लूज था। 20और याकूब ने यह मन्नत मानी, "कि यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहिनने के लिये कपड़ा दे, 21और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं: तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा। 22और यह पत्थर, जिसका मैं ने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन ठहरेगा: और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा।"

आयतें 18, 19. इस तरह के उत्साही और श्रद्धायुक्त भय प्रेरित स्वप्न के अनुभव के बाद, बाकी रात **याकूब** थोड़ा ही सो पाया था। **भोर को याकूब तड़के उठा**, और उस **पत्थर** को लिया जो उसने अपने सिर के नीचे **तकिए** के लिए रखा था, उसने उसे **खम्भे** מַצֵּבָה *(matstsebah)* के रूप में सीधा खड़ा किया। फिर उसने **उसके सिरे पर तेल** उण्डेल दिया और विशेष धार्मिक महत्वता के साथ एक

स्थान के रूप में पवित्र किया। भले ही पत्थर को खड़ा करने का उल्लेख बाइबल आधारित कहानी में पहली बार हुआ है, यह तो बड़ी अनोखी बात है कि याकूब ने एक बिलकुल नई प्रथा का आरम्भ कर रहा था जब उसने उस पत्थर पर तेल उण्डेला। उसने **उस स्थान का नाम लूज** से **बेतेल** ("परमेश्वर का भवन") रख दिया। यह छोटा सा कनानी नगर बाद की शताब्दियों में इस्राएलियों का मुख्य आराधना स्थल निर्धारित हो गया था।

बाइबल के आरम्भिक विवरणों में पत्थर खड़ा करने के उल्लेख सीमित है, परन्तु खम्भों का उल्लेख प्रायः यह बताने के लिए किया गया कि कुलपति और मूसा के काल में वे प्रचलित हो गए थे। पत्थर के खम्भों के कई कार्य थे। (1) वे लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति के दिखाई देने वाले चिन्हों के रूप में कार्य करते थे (28:18, 22; 31:13; 35:14)। (2) सीनै पर्वत पर, मूसा ने 12 खम्भों को परमेश्वर और उसकी वाचा के आधीन इस्राएल के 12 गोत्रों की एकता को दर्शाने के लिए खड़ा किया था (निर्गमन 24:4)। (3) कभी कभी व्यक्तिगत रूप से खम्भों को सीमा स्थापित करने या दो पक्षों के मध्य बराबर की संधि की साक्षी के रूप में प्रयोग किए गए (31:45, 51, 52)। (4) खम्भे प्रिय जनों की कब्रों के ऊपर स्मृति चिन्ह के रूप में भी कार्य करते थे (35:20), और कभी-कभी ऐसे व्यक्तियों की स्मृति में भी खड़े किए जाते थे जो अभी जीवित थे (2 शमूएल 18:18)।

जब इस्राएली प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने की तैयारी कर रहे थे, मूसा ने उनको कनानियों के खम्भों के विषय सावधान किया था। सतही तौर पर तो यह स्मृतियाँ सीधी सादी सी दिखाई देती थीं; वास्तव में, वह मूर्तिपूजा और निर्लज्ज अनैतिकता का अभिन्न अंग बन बन गई थी (व्यव. 16:22), परन्तु उनको नाश करना था (निर्गमन 23:24; 34:13; व्यव. 7:5; 12:3)। इन कठोर कार्यवाहियों का कारण यह था कि परमेश्वर जानता था कि कितनी आसानी से यह पत्थर के खम्भें मूर्ति के चिन्ह में बदल जाएँगे और फिर इसकी पूजा होगी। बड़े दुख की बात है कि कनानी मूर्तिअराधक पंथ की आकर्षकता इस्राएलियों के लिए बहुत कुछ बन गई थी और वे मूर्तिपूजा में डूबते चले गए। और अन्त में, यह उनके कौम को विनाश की ओर ले गई और शत्रुओं के हाथ बंधुआई में चले गए (1 राजा 11:4-8; 14:21-28; 2 राजा 17:6-18; 23:4-8, 13-15, 24-27; 24:1-4)।

आयतें 20-22. याकूब ने स्वप्न में की गई परमेश्वर से बातचीत का प्रतिउत्तर एक **मन्नत** मानने के द्वारा दिया जिसमें **यदि ... तो** का जटिल कथन शामिल था। कुलपति यहोवा से मोलभाव कर रहा था, कई शर्तों[10] को मानने के बदले में वह उसकी सेवा करने की प्रतिज्ञा कर रहा था। पहली, उसने **परमेश्वर को उसके साथ रहने के लिए** और यात्रा में रक्षा करने के लिए कहा। दूसरी, उसने परमेश्वर से खाने के लिए **भोजन और पहनने के लिए वस्त्र उपलब्ध करवाने** की मांग की। तीसरी, वह चाहता था कि **यहोवा** उसे अपने **पिता** के घर में सुरक्षित वापिस लेकर जाए। यदि परमेश्वर यह सब बातें करेगा तब याकूब अपनी निश्चित मन्नत को पूरा करेगा। उसने प्रतिज्ञा की कि परमेश्वर उसका परमेश्वर होगा। और वह

उस पत्थर को भी पवित्र करेगा जो उसने **परमेश्वर के भवन** को दर्शाने के लिए **खम्भे के रूप** में खड़ा किया था। अन्त में उसने प्रतिज्ञा की कि वह परमेश्वर कि दिए हुए सब कुछ में से उसे **दशमांश** देगा (देखें 14:20)। यह अन्तिम कथन यहोवा के प्रति उसके समर्पण की गम्भीरता को दर्शाता है।[11]

बेतेल में याकूब के अनुभव ने उसके लिए पुनःस्थापन की प्रक्रिया को आरम्भ किया, परन्तु उसे अभी भी बहुत कुछ सीखना था कि दिव्य कार्य पर परमेश्वर का जन होने का क्या अर्थ है। याकूब के चरित्र को विकसित होने के लिए कठिनाई भरे कई वर्ष लगे ताकि वह गहरे स्तर पर परमेश्वर पर भरोसा कर सके और अपने जीवन में धार्मिकता का फल ला सके। कम से कम पत्नी को पाने के लिए उसकी हारान की यात्रा ने एक गहरा अर्थ लिया। यह न केवल पत्नी पाने के लिए एक यात्रा बनी परन्तु उसने स्वयं को परमेश्वर की योजना में "पृथ्वी की सारे कुलों" को आशीष के स्रोत के रूप में भी पाया (28:14)।

अनुप्रयोग

एक पापी व्यक्ति परमेश्वर का सामना करता है (अध्याय 28)

बेतेल में याकूब पर परमेश्वर के दर्शन से पहले, उत्पत्ति 28:12-15 में वर्णन किया गया है, मृत्युशय्या पर पड़े अपने पिता से आशीष पाने के लिए याकूब ने अपने पिता इसहाक से झूठ बोला और उसको धोखा दिया। कहानीकार प्रकट करता है कि एसाव ने अपने भाई की हत्या करने के द्वारा इसका बदला लेना चाहा। परन्तु उसने अपने पिता की मृत्यु होने तक प्रतीक्षा करने का निर्णय लिया (27:41)। रिबका ने अपने बड़े पुत्र की इस योजना के विषय सुन लिया था, परन्तु उसने इसे अपने पति पर प्रकट नहीं किया, यह सोचते हुए कि उसको बहुत दुःख होगा। आखिरकार, एसाव उसका चहेता पुत्र था। इसके बजाए उसने इसहाक को कहा कि वह यह सहन नहीं कर सकती कि याकूब कनानियों में से अपने लिए किसी लड़की को पत्नी बनाए जैसा एसाव ने किया (27:46)। उसने अपने पति से विनती की कि वह याकूब को पत्नी ढूँढने के लिए अपने भाई लाबान के घर हारान भेज दे, जहाँ कई वर्ष पहले अब्राहम के सेवक ने उसे पाया था (28:1-5)।

घर से एक पापी की यात्रा। याकूब ने अपनी चार सौ मील से भी अधिक लम्बी यात्रा को अपने कार्य की सफलता को लेकर घबराहट और संदेह के साथ आरम्भ किया होगा। व्यक्तिगत रूप से जिसने सोचा होगा कि उसके पास पूर्ण उत्तर हैं अब कोई भी नहीं; यह उसके जीवन का प्रत्यक्ष निम्न स्तर था। उसने धन, पद, और अगुवाई को पाने का प्रयत्न किया; परन्तु इन सबको पाने के प्रयास में उसने अपना घर खाली हाथ ही छोड़ दिया। इच्छाओं और पद को अपने लिए पाने के लोभ में एसाव के द्वारा शपथ खाने से और अपने पिता का अटल आशीर्वाद लेने के लिए अर्थात उसकी विरासत में दोगुना भाग लेने के लिए और परिवार की प्रधानगी लेने के लिए। अभी तक उसे इन में से किसी का भी उसे

लाभ नहीं होगा या हारान में अपने लिए पत्नी पाने के लिए सक्षम करेगा। फिर भी यदि वह अपनी इस यात्रा के पहले भाग में सफल हो भी जाता, उसके और उसकी नई पत्नी के बेर्शेबा में सुखद और सुरक्षित सम्भावना नहीं दिखाई दे रही थी।

जब याकूब ने अपना घर छोड़ा, वह लोभी, और स्वार्थी और सत्यनिष्ठा की कमी का आदर्श था। इस तरह के लोग सफलता की सीढ़ी पर यह सोचे बिना ही चढ़ना चाहते हैं कि ऊपर चढ़ने के लिए किन किन के सिरों को कुचलकर ऊपर जा रहे हैं अर्थात परिवार, मित्र या कार्यस्थल के संगी साथी। कइयों ने इस पीड़ादायक पाठ को सीखा कि "तुम्हारे पाप तुम्हारा पीछा करेंगे" (गिनती 32:23), प्रायः विनाशकारी परिणामों के साथ। अपने जीवन के इस चरण में, याकूब के पास अपनी कुटिल योजनाओं के परिणामों को जानने का कोई उपाय नहीं था। उसको इस बात की कोई भनक नहीं थी कि लाबान, उसका भावी ससुर, हारान में उसके बेर्शेबा वापिस आने से पहले संघर्ष और व्याकुलता के कितने वर्ष खड़े कर देगा।

परमेश्वर का लक्ष्य। बेर्शेबा से लूत (बेतेल) तक लगभग तीन दिन की यात्रा करने बाद, याकूब वहाँ पर सूर्य डूबने के बाद पहुँचा (28:10, 11)। अन्धकार में, उसने तकिया प्रयोग करने के लिए एक पत्थर को पाया; तब वह धरती पर ही लेट गया और नींद आने की प्रतीक्षा करने लगा। यह मात्र प्राकृतिक अन्धकार से कहीं बढ़कर होगा और रात्रि की निर्जनता जिसने याकूब पर गहरी नींद डाल दी, वह अपने प्राण के घोर अन्धकार का भी अनुभव कर रहा होगा।

निश्चय ही, वह प्रश्नों, संदेहों और भय से भरा हुआ था जब उसने उस कठोर धरती पर सोने का प्रयास किया था। वह एसाव के क्रोध से बचने और पत्नी पाने के लिए घर से बाहर आ गया था, परन्तु कहानी में इस बात का कहीं भी कोई संकेत नहीं मिलता कि वह परमेश्वर की खोज कर रहा था। अनजाने में वह अपने माता पिता की कहानियों के द्वारा अपने जीवन में परमेश्वर के हस्तक्षेप से बचने का प्रयास कर रहा होगा। परन्तु परमेश्वर याकूब के जीवन में ज़बदस्ती घुसता आ रहा था जैसे वह अब्राहम के जीवन में आया था (12:1; प्रेरितों 7:2) और इसहाक (26:2-4, 24, 25)। पहला कदम उठाते हुए, परमेश्वर स्वप्न में याकूब पर प्रकट हुआ। इसमें उसके लज्जाजनक जीवन कोई भी भाग प्रकट नहीं था, उसके अन्दर अपराधदोष को उभाड़ने के लिए कोई दिव्य झिड़की नहीं थी। इसके बजाए परमेश्वर ने स्वयं को याकूब पर प्रकट किया और अपने साथ एक नये भविष्य की सम्भावना प्रदान की, याकूब को नई आशा और जीवन में एक नई दिशा प्रदान की।

जब परमेश्वर ने स्वप्न में याकूब से बात की (28:12), उसने स्वयं को "यहोवा" के रूप में प्रकट किया, अब्राहम और इसहाक का परमेश्वर (28:13)। तब उसने याकूब को और उसके वंश को आशीषित करने की प्रतिज्ञा दी। (1) जिस धरती पर वह लेटा हुआ है वह उन्हें देगा (28:13)। (2) कुलपति का वंश बढ़ेगा और सारी धरती पर फैल जाएगा और धरती के सारे कुल उनके द्वारा

आशीषित होंगे (28:14)। (3) परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से याकूब के साथ रहने की प्रतिज्ञा दी (28:15; देखें 26:3, 24; 31:3; 46:4; 48:21; निर्गमन 3:12)। उसने याकूब की निगरानी रखने, सुरक्षा देने और यात्रा में जो कुछ सामने आए उससे सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा दी (28:15; देखे भजन 91:11-16)। इस दिव्य प्रतिज्ञा में घर वापिसी शामिल है, कनान देश में वापिसी जिससे अभी वह भाग रहा था (28:15)।

यहोवा याकूब को नहीं त्यागेगा, चाहे उसका काम पूरा होने में कितनी भी देरी लगे या चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन हो जाएँ (28:15)। बाद में इस्राएली इस बात से स्थिर थे कि हारान में लाबान उसे शोषित कर रहा था, बीस वर्ष परमेश्वर कुलपति के साथ रहा। उन्होंने कहा, "सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा ऊँचा गढ़ है" (भजन 46:7, 11)।

पापी का प्रत्युत्तर। अपने स्वप्न से जागने के बाद, याकूब भय से काँपने लगा और उसने कहा, "निश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न जानता था ... यह स्थान क्या ही भयानक है! यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन यह स्वर्ग का फाटक ही होगा" (28:16, 17)। बाद में बुद्धिमान लिखता है, "यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है" (नीति. 1:7); और परमेश्वर के इस अनोखे दर्शन के साथ भयभीत याकूब परमेश्वर की श्रेष्ठ बुद्धि की ज़रूरत को महसूस करने लगा। अपने भाई के साथ कुटिलता में और अपने पिता से झूठ बोलने के अपने धोखेबाज़ व्यवहार के प्रति जागरूक था, परन्तु सम्भवत इस तरह के व्यवहार को उसने ज़रूरत समझकर तार्किक आधार उचित ठहराया हो। इस असाधारण दर्शन को देखने के बाद, अब उसने उचित श्रद्धामयी भय को प्रकट किया और स्वयं को परमेश्वर की उपस्थिति में पापी के रूप में देखने लगा। इस तरह के पाप के प्रति कायलता और विनम्रता हमेशा ही उचित होती है।[12] याकूब बड़ा हैरान हुआ कि लूज में यहोवा उसके साथ है, वह उस धारणा को समझने लगा कि किसी भी स्थान पर, जहाँ यहोवा के लोग होंगे, वह "परमेश्वर का भवन" (बेतेल) बन जाएगा। अन्ततः उसने उसने अपने दादा और पिता के परमेश्वर के स्वभाव और महिमा को समझना आरम्भ कर दिया।

समय पूरा होने पर, परमेश्वर ने यीशु के व्यक्तित्व में अपनी महिमा का परम प्रकटीकरण किया। परमेश्वर अपनी महिमा को इस तरह से ढक रहा था कि वह एक सामान्य व्यक्ति तरह दिखाई दिया; परन्तु यीशु सामान्यता से कहीं ऊपर था और वह मात्र एक मनुष्य से कही बढ़कर था। वह परमेश्वर के पुत्र का साकार रूप था (यूहन्ना 1:49)। उसकी सेवा के दौरान, उसने ऐसे ज़बरदस्त आश्चर्यकर्म किए जिन्हांने उसकी पहचान की साक्षी दी (प्रेरितों 2:22; 10:38)। एक अवसर पर जब यीशु ने गलील के काना नगर में पानी को दाखरस में परिवर्तित कर दिया था, बाइबल अंश कहता है कि उस आश्चर्यकर्म ने "परमेश्वर की महिमा को प्रकट किया" (यूहन्ना 2:11)।

जैसे कि "वह उस [परमेश्वर] की महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है" (इब्रा. 1:3), यीशु इस जगत में परमेश्वर प्रेमी हृदय को दर्शाने के लिए आया,

खोए हुओं को ढूँढने की जो हमेशा चाहत रखता है (लूका 15:1-32; 19:1-10)। सुसमाचार की बुलाहट सब लोगों के लिए है, धन, सामाजिक स्तर या धार्मिक पद की परवाह किए बिना; परन्तु यीशु की सेवा का मुख्य भाग आम लोगों में था (लूका 7:36-50; यूहन्ना 9:1-41)। उनकी सेवा करते हुए, दुष्टात्माओं को भगाते हुए, बीमारों को चंगा करते हुए और पापियों के जीवनों को आशीषित करते हुए यीशु ने परमेश्वर की महिमा को प्रकट किया (मरकुस 1:21-2:17)।

यह सब बातें यहूदियों के संभ्रांत वर्ग के लिए चौंका देने वाली बातें थीं, जिनमें प्रधान याजक, शास्त्री और फ़रीसी भी शामिल थे; परन्तु यह कार्य परमेश्वर के बचाने वाले "प्रेम" के विशाल उदाहरण के प्रणेता थे (यूहन्ना 3:16) या "महिमा" के (यूहन्ना 12:23, 28; 2 कुरि. 3:18) जैसा कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु से दर्शाया गया था (यूहन्ना 12:31-33; 2 कुरि. 5:19-21)। उस घटना में, यीशु ने "छुड़ौती" के रूप में स्वेच्छा से जगत के पापों के लिए अपनी जान दे दी (मरकुस 10:45; फिलि. 2:5-8)। उनके लिए जिन्होंने निर्मल और निष्ठावान हृदय से उसके विश्वास, आज्ञाकारिता और आराधना में प्रतिउत्तर दिया। यह उन लोगों की स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी जिनके जीवन उसकी दया और तरस से हमेशा के लिए बदल गए थे (मत्ती 28:9, 17; यूहन्ना 9:38; प्रेरितों 2:22-42)।

लूज में परमेश्वर की महिमा के दर्शन के प्रति याकूब का प्रतिउत्तर यीशु के अनुयायियों के अनुरूप ही था और यह उत्पत्ति 12:7, 8; 22:1-18; 26:1-5, 24, 25 (देखें प्रेरितों 7:2) में उसके पुरखाओं के प्रतिउत्तर से मिलता जुलता था। जब परमेश्वर ने याकूब को आशीषित करने की, साथ रहने की और उसके और उसके वंश की रक्षा करने के सुसमाचार को प्रकट किया, उसके संदेश ने विश्वास, समर्पण और इस ज़िद्दी व्यक्ति में आराधना का प्रतिउत्तर उत्पन्न हुआ। याकूब इस बात को मान गया था कि वह अयोग्य और स्वार्थी रहा है, उसका जीवन धरती के सारे कुलों की आशीष, परमेश्वर की योजना को बनाए रखने में स्रोत के रूप में प्रयोग किया जाएगा (28:13-15)।

पहली बार, याकूब अपनी विचारधारा पर फिर से विचार करने लगा। आभार और आराधना की प्रतिक्रिया ने उसे पत्थर लेने दिया जो उसने तकिए के रूप में प्रयोग किया था और उसे स्मृति खम्भे के रूप में खड़ा कर दिया। उसने इस पर तेल उण्डेला और इसका "बेतेल" ("परमेश्वर का भवन") नाम के साथ अभिषेक किया। उसने इस क्रिया को परमेश्वर के साथ समर्पण करने के बाद किया। यदि वह सब आशीषें प्राप्त करेगा जिसकी यहोवा ने प्रतिज्ञा की है, तब वह उसकी आराधना और सेवा करेगा। वह आराधना के विशेष स्थान बेतेल बनाएगा, और जो कुछ परमेश्वर उसे देगा उसका दशमांश परमेश्वर को देगा (18:18-22)। परन्तु, अपने "यदि ... तब" वाले समर्पण में, याकूब परमेश्वर के साथ मोल भाव का प्रयास कर रहा था। यह समर्पण और आराधना का उच्च रूप नहीं था, परन्तु कम से कम एक आरम्भ था। कोई भी व्यक्ति जो परमेश्वर की आज्ञाकारिता का चयन करता है उसे नई प्राथमिकताओं और नई जीवनशैली को विकसित करने में संघर्ष तो करना ही होता है।

यीशु, स्वर्ग जाने की हमारी सीढ़ी (28:12)

यीशु याकूब की सीढ़ी के साथ जुड़ी हुई प्रतिज्ञाओं की परम पूर्ति है। यूहन्ना ने विवरण दिया, उनकी पहली भेंट से पहले, यीशु नतनएल को जानता था कि वह किस तरह का व्यक्ति है इसके साथ ही साथ वह उसके मन के विचारों को भी जानता था। इस जवान व्यक्ति को बड़ी हैरानी हुई और उसने उसे परमेश्वर के पुत्र के और इस्राएल के राजा के रूप में उसमें विश्वास का अंगीकार किया। उसके प्रतिउत्तर में प्रभु ने उसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे" (यूहन्ना 1:51)। यीशु स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का वास्तविक संबंध सूत्र है।

ऊपरी कक्ष में अपने शिष्यों के साथ पसह मनाने के बाद, यीशु ने उन्हें बताया कि उनके लिए "स्थान तैयार करने को" वह अपने पिता के घर (स्वर्ग) जा रहा है (यूहन्ना 14:2)। उसने कहा, "और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो।" परन्तु थोमा ने कहा, "हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहां जाता है? तो मार्ग कैसे जानें?" (यूहन्ना 14:4, 5)। तभी यीशु ने एक महान अभिवचन दिया "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (14:6)। यीशु परमेश्वर तक जाने का एक ही "मार्ग" (सीढ़ी) है।

"परमेश्वर का भवन" (28:16, 17)

लूज में स्वर्ग की ओर जाने वाली सीढ़ी के याकूब के स्वप्न के बाद, उसने निष्कर्ष निकाला, "निश्चय इस स्थान में यहोवा है; और मैं इस बात को न जानता था।" और भय खाकर उस ने कहा, "यह स्थान क्या ही भयानक है! यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता; वरन यह स्वर्ग का फाटक ही होगा" (28:16, 17)। वह अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस करने लगा। अपने जीवन के अन्तिम समय में, कुलपति ने प्रमाणित किया कि परमेश्वर उसके जीवन भर उसका चरवाहा बनकर रहा (48:15)। सच्च में, जहाँ भी परमेश्वर के लोग हैं, वहाँ वह उनके साथ है।

जब तक इस्राएली जाति ने लाल सागर को पार कर न कर लिया और सीनै पर्वत तक यात्रा न कर ली, उन्होंने वास्तव में इस सत्य पर विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर ने उनकी यात्रा में "दिन में बादल" और "रात में आग का खम्भा" बनकर अगुवाई की (निर्गमन 13:21, 22; 14:19, 24)। निर्जन प्रदेश की 40 वर्ष की यात्रा में, वही आग और बादल की घटना मिलाप वाले तम्बू पर हुई और इस्राएलियों को प्रतिज्ञा के देश तक की यात्रा में अगुवाई की (निर्गमन 29:42-46; 40:34-38)।

बाद में भी, सुलैमान के मन्दिर के निर्माण के साथ, "तब यहोवा के भवन में बादल भर आया। और बादल के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह

सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था" (1 राजा 8:10, 11)। दुःख की बात यह थी कि इस्राएलियों का धीरे-धीरे इस भवन और वहाँ पर की जाने वाली आराधना के प्रति अंधविश्वास बढ़ गया। वे परमेश्वर की बजाए मन्दिर पर भरोसा करने लगे। वे सोचने लगे कि चाहे वह जो पाप करें जैसे मूर्तिपूजा, पूज्य वेश्यावृत्ति और यहाँ तक कि बच्चों की बलि, इसके बावजदू भी परमेश्वर उनके साथ रहेगा। उन्होंने यह सोच लिया कि जब तक वे परमेश्वर के भवन में आराधना की प्रवृत्ति में रहेंगे, परमेश्वर यरूशलेम या उसके मन्दिर को कभी नाश नहीं होने देगा (यिर्म. 7:1-15)।

इस तरह की विचारधारा के कारण, यरूशलेम के लोगों ने नबी के तर्कों की अवहेलना की और अपने हृदयों को कठोर कर लिया और अपने पापों से पश्चाताप करने से इनकार कर दिया। ज्यों-ज्यों यहूदा के राज्य और इसकी राजधानी का समय बीतता रहा था, नगर के यहूदियों ने स्वयं को सुरक्षित समझ लिया क्योंकि उनके अन्दर एक झूठा आश्वासन था कि यहोवा मन्दिर या पवित्र नगर की कुछ भी हानि नहीं होने देगा। वास्तव में, उन्होंने अपने यहूदी भाइयों का मज़ाक उड़ाया जो पहले ही बाबुल की बंधुआई में चले गए थे, यह कहकर कि वे "परमेश्वर से दूर" हो गए थे और वे इस बात का दावा करते थे कि जो अभी यरूशलेम में हैं वे सुरक्षित हैं क्योंकि परमेश्वर ने उनको वह देश "एक अधिकार के रूप में" दे दिया है (यहेज. 11:15)।

उस समय, बाबुल में यहूदियों के लिए परमेश्वर का आशा का संदेश यह था कि वह उनका "पवित्रस्थान" है מִקְדָּשׁ *(मिकदाश)* पवित्र स्थान" या "मन्दिर"; यहेज. 11:16)[13], हालाँकि वे इस पराए देश में अपने घर से बहुत दूर थे। पुराना नियम में, *मिकदाश* कभी कभी जंगल में मिलाप वाले तम्बू के लिए (निर्गमन 25:8, 9; लैव्य. 12:4; 19:30; 20:3) और यरूशलेम में मन्दिर के लिए भी प्रयोग किया जाता था (1 इतिहास 22:19; 28:10; 2 इतिहास 20:8; नहेम्य. 10:39)। इस्राएलियों के लिए परमेश्वर का संदेश उस दूर बाबुल के देश में वही संदेश था जो याकूब, पहले इस्राएली का था, जब वह उत्तर पश्चिय मेसोपोटामिया की ओर यात्रा पर थाः इसमें कोई बात नहीं कि आप कहाँ हैं, वास्तविक "परमेश्वर का भवन" (मन्दिर) वहीं है जहाँ उसके लोग हैं परमेश्वर उनके साथ रहने की प्रतिज्ञा के कारण (26:3, 24; 28:15)।

याकूब के स्वप्न और यहेजकेल के दर्शन की पूर्ण पूर्ति तब तक नहीं हुई जब तक परमेश्वर ने स्वयं को एक व्यक्ति यीशु में प्रकट नहीं किया। यूहन्ना ने कहा, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था" (यूहन्ना 1:1) उसके बाद प्रेरित ने यीशु के साकार रूप में आने की बात को जारी रहा, "और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा ('वास किया'[14]) किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना 1:14)।

परमेश्वर की महिमा का यह प्रकटीकरण बिलकुल भिन्न था उससे जो इस्राएल ने सीनै पर्वत की तराई में गर्जन और बिजली में अनुभव किया था

(निर्गमन 19:16-18)। यहोवा की उपस्थिति की चकाचौंध महिमा की तरह नहीं था जिससे परमेश्वर को ढाल बनकर मूसा को बचाना था ताकि वह मर न जाए (निर्गमन 33:20-23)। यह ऐसा भी नहीं था जैसा मूसा के चेहरे पर तेज था, जब वह परमेश्वर की उपस्थिति से पहाड़ पर से नीचे उतर आया था। इस तरह की महिमा ने इस्राएलियों को भयभीत कर दिया था, और मूसा को अपना चेहरा ढकना पड़ा ताकि वह लोगों से बातचीत कर सके (निर्गमन 34:29-34)।

एक व्यक्ति यीशु में उसकी संसारिक सेवा के दौरान परमेश्वर शिष्यों के साथ एक विशेष रूप से था। फिर वह मृतकों में से जी उठा और उनका सुसमाचार प्रचार के लिए प्रतिरोधी संसार में भेजने वाला था (मरकुस 16:15, 16), यीशु ने उन्हें अपनी प्रतिज्ञा दी, "देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:20)। उसके कई वर्ष बाद, जब यहूदी मसीह में सताव का सामना कर रहे थे, इब्रानियों के लेखक ने उनको परमेश्वर की एक अन्य प्रतिज्ञा को स्मरण करवायाः "मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा" (इब्रा. 13:5)। उसने उनको यह लिखने के द्वारा उत्साहित किया, "यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है" (इब्रा. 13:8)।

परिवर्तन और समर्पण (28:18-22)

यीशु के शिष्यों के पास इस बात का कुछ भी संकेत नहीं था कि उनके जीवनों में क्या परिवर्तन होगा या उसके प्रेरित होने की उनको क्या कीमत चुकानी होगी जब वे यीशु का अनुसरण करेंगे। भले ही उन्होंने अपने समर्पण में "यदि ... तब" की भाषा का प्रयोग नहीं किया जैसे याकूब ने बेतेल में किया था, परन्तु उन्होंने निश्चय ही यीशु के राज्य में धन और पदवी पाने के प्रतिफल की आशा की होगी (मत्ती 19:23-30; 20:20-28)। इसलिए, वे प्रायः प्रभु की सांसारिक सेवा के दौरान प्रभु के कार्यों और शिक्षाओं के परिणामों से परेशान हो जाते थे और डर जाते थे। वे जानते थे कि उसका पवित्र जीवन, और परमेश्वर की व्यवस्था की व्याख्या शास्त्रियों और फ़रीसियों का विरोध करती थी क्योंकि यह उनके पाखण्ड को प्रकट करती थी (मत्ती 5:1-7:29; 23:1-39; मरकुस 2:1-12)। धीरे धीरे वे इस तथ्य के और भी अधिक जागरूक हो गए कि प्रधान याजक और यहूदी अगुओं ने यीशु को अपने लिए खतरा महसूस किया और एक ऐसा खतरा रोमियों के क्रोध को उनके देश पर ला सकता था (यूहन्ना 7:14-32; 8:48-59; 11:7-10, 45-53)।

जब यीशु ने अपने शिष्यों को यरूशलेम में यहूदी अगुओं के हाथों अपनी होने वाली मृत्यु के विषय पूर्वसूचना दी तो वे अवाक रह गए और वे विश्वास नहीं कर सके कि इस तरह की बात मसीह के साथ क्या वास्तव में हो सकेगी। यहाँ तक कि पतरस ने यह कहते हुए उसे डांटा, "हे प्रभु, परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा" (मत्ती 16:22)। जब यीशु पकड़वाया गया था, तब वे सभी उसे छोड़कर रात को ही भाग गए (मरकुस 14:50)। उन्होंने स्वयं को यहूदियों के डर के मारे घर में बन्द कर लिया था (यूहन्ना 20:19)। यह मात्र यीशु का प्रतापी

पुनरुत्थान ही था जिसने इन डरपोक लोगों को ज़बरदस्त साक्षी में परिवर्तित कर दिया जिनको सताव और मृत्यु की धमकी मिली कि वे यीशु के प्रचार को न करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र और संसार का उद्धारकर्ता है (प्रेरितों 4:1-12; 5:27-32; 7:51-8:3; 12:1-5)। उनके जीवन आराधना और विश्वास की विजयी सेवा के द्वारा चित्रित किए गए; और उन्होंने अपनी अन्तिम सांस तक प्रभु के रूप में उसकी स्तुति की (प्रेरितों 7:59, 60)।

समाप्ति नोट्स

[1]आमतौर पर "पद्दनराम" उत्तर पूर्व मेसोपुतामिया, जो "आराम का नगर" के क्षेत्र का दूसरा नाम है। फिर भी कुछ लोगों का मानना है कि यह हारान के नगर का दूसरा नाम है। (वेयन टी. पीटार्ड, "पद्दन - आराम," *दि एंकर बाइबल डिक्सनरी*, संपादक डेविड नोएल फ्रीडमैन [न्यू यॉर्कः डबलडे, 1992], 5:55.) [2]परमेश्वर का यह नाम उसके अपराजय सामर्थ का वर्णन करती है (देखें 17:1; निर्गमन 6:3)। [3]प्राचीन हारान का स्थल आधुनिक तुर्की और सीरिया की सीमा के समीप बलीह नदी के किनारे पाया जाता है, यह सहायक नदी दक्षिण में बहती है और फरात नदी में जाकर मिल जाती है। [4]पुराने समयों में, तकिया बहुत ही सख्त होता होगा। इन में से कुछ को मिस्र में खोजा गया है, यह पत्थर, धातु या लकड़ी के बने थे। उदाहरण के लिए, अल्फ्रेड जे. होइर्थ के चित्र में देखें, *आरकियालोजी एण्ड दि ओल्ड टैस्टामेंट* (ग्रेंड रेपिडस, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1998), 112. [5]आर. के. हैरीसन, "सीढ़ी," इन *इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइकलापीड़िया*, रेव, इड., इड. जेफ्री डब्लयू. ब्रोमिले (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमेनस पबलिशिंग कम्पनी, 1986), 3:60. [6]प्राचीन लोग विश्वास करते थे कि जिग्गुरात का स्वर्ग और पृथ्वी के साथ संबंध सूत्र था। नव वर्ष के दिन, और सम्भवतः अन्य विशेष अवसरों पर, राजाओं और याजकों के नियमित जलूसों में इस सीढ़ी के द्वारा उनके जग्गुरात के शिखरों के मन्दिरों में अपने देवताओं की पूजा करने जाया करते थे। जब उनकी धर्मक्रियाएँ पूरी हो जाती थीं और उन्हें विश्वास हो जाता था कि उनके उपहारों से देवता प्रसन्न हो गए हैं, वे उसी सीढ़ी से नगर को आते थे और नये वर्ष की भरपूर आशीषों का आनन्द उठाने की आशा करते थे। [7]विक्टर पी. हैमिल्टन, *दि बुक ऑफ जेनेसिसः चैप्टर 18-50*, पुराना नियम पर न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमेनस पबलिशिंग कम्पनी, 1995), 241. [8]उत्पत्ति इसे कई तरीकों से बताती है जिसमें उन्होंने इस उद्देश्य को पूरा किया (12:2, 3; 14:13-24; 17:4-8; 22:17, 18; 25:11; 26:2-4, 12-14, 24, 28, 29)। [9]अब्राहम ने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई और कई वर्षों के बाद आस पास के क्षेत्र में (बेतेल के पूर्व में) परमेश्वर के नाम को पुकारा (12:8)। परन्तु याकूब सम्भवतः उस रात बेतेल के नज़दीक किसी अन्य स्थान पर रात को रुका था (जब वह उत्तर की ओर यात्रा कर रहा था)। उसने इस बात को नहीं जान होगा कि वह क्षेत्र वही है जहाँ उसके दादा ने आराधना की थी, और वह वेदी अब वहाँ नहीं रही होगी। [10]इनमें से अधिकांश शर्तें उत्पत्ति 28:15 में पहले ही परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। सारांश में, याकूब परमेश्वर से कह रहा था, "यदि तुम अपनी प्रतिज्ञाओं को मेरे लिए पूरा करोगे, तो यह मैं तुम्हारे लिए करूँगा।"

[11]जब परमेश्वर याकूब को कनान में वापिस लेकर आया, तब उसने याकूब को बेतेल में वेदी बनाने का निर्देश दिया (35:1)। सम्भवतः, याकूब ने अपने जानवरों में से बलिदान करने के द्वारा दशमांश देने की अपनी मन्नत को पूरा किया (35:7)। [12]मूसा के उदाहरणों में एक प्रमाण है (निर्गमन 3:6), इस्राएल (निर्गमन 19:16), गिदोन (न्यायियों 6:22, 23), शिमशोन के माता पिता (न्यायियों 13:20-22), यशायाह (यशा. 6:5) और पतरस (लूका 5:8, 9)। [13]थोमस ई. मैककोमिसके, "מִקְדָּשׁ," *TWOT* में, 2:789. [14]यूनानी भाषा शब्द "वास किया" में अनुवाद किया गया यह संज्ञा σκηνή *(स्केने)* का क्रिया रूप है।